यदि=यदि; **माम्**=मुझ; **अप्रतीकारम्**=सामना न करने वाले; **अशस्त्रम्**=शस्त्र-रहित; **शस्त्रपाणयः**=शस्त्रधारी; **धार्तराष्ट्राः**=धृतराष्ट्र के पुत्र; **रणे**=युद्ध में; **हन्युः**=मारें; **तत्**=वह; **मे**=मेरे लिए; **क्षेमतरम्**=श्रेयस्कर; **भवेत्**=होगा।

अनुवाद

धृतराष्ट्र-पुत्रों से युद्ध करने की अपेक्षा यदि मुझ शस्त्ररहित और सामना न करने वाले को वे रण में मारें, तो वह मेरे लिए अधिक कल्याणकारक होगा।।४५।।

तात्पर्य

क्षात्र-युद्धनियमों के अनुसार यह परम्परा है कि जो शस्त्ररहित है अथवा युद्ध से पराङ्मुख हो गया है, उस शत्रु पर आक्रमण नहीं करना चाहिए। अपनी दुर्बोध स्थिति को देखते हुए अर्जुन ने निर्णय किया कि शत्रु का आक्रमण होने पर भी वह युद्ध नहीं करेगा। उसने इस बात को महत्त्व नहीं दिया कि शत्रुपक्ष युद्ध के लिए कितना उद्यत है। इन सब लक्षणों का कारण है उसके हृदय में भक्तियोग से उत्पन्न दयार्द्रता।

सञ्जय उवाच।
एवमुक्त्वार्जुनः संख्ये रथोपस्थ उपाविशत्।
विसृज्य सशरं चापं शोकसंविग्नमानसः।।४६।।

सञ्जयः उवाच=सञ्जय ने कहा; **एवम्**=इस प्रकार; **उक्त्वा**=कहकर; **अर्जुनः**=अर्जुन; **संख्ये**=युद्धभूमि में; **रथ**=रथ पर; **उपस्थे**=स्थित हुआ; **उपाविशत्**=पुनः बैठ गया; **विसृज्य**=त्यागकर; **सशरम्**=बाणसहित; **चापम्**=धनुष को; **शोक-संविग्नमानसः**=शोक से व्याकुल मन वाला।

अनुवाद

संजय ने कहा, रणभूमि में इस प्रकार कहकर शोक से व्याकुल चित्त वाला अर्जुन बाणसहित धनुष को त्याग कर रथ में बैठ गया।।४६।।

तात्पर्य

शत्रु-स्थिति का निरीक्षण करते समय अर्जुन अपने रथ पर खड़ा हुआ था। न्तु सैन्य-निरीक्षण करके वह शोक से इतना अधिक अभिभूत हो गया कि धनुषबाण को एक ओर रख कर फिर रथ में बैठ गया। इस प्रकार का भगवद्भक्ति-परायण दयार्द्र और सहृदय पुरुष निश्चय ही आत्मज्ञान की शिक्षा पाने के योग्य है।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादेऽर्जुनविषादयोगो नाम प्रथमोऽध्यायः।।१।।

इति भक्तिवेदान्त भाष्ये प्रथमोऽध्यायः।।